

### प्रातः कालीन प्रार्थना:

ओं प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रा वरुणा प्रातरश्विना ।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम ॥१॥

ऋग् ७:४१:१

प्रातः । अग्निम् । प्रातः । इन्द्रम् । हवामहे । प्रातः । मित्रावरुणा । प्रातः । अश्विना ।

प्रातः । भगम् । पूषणम् । ब्रह्मणः । पतिम् । प्रातः इति । सोमम् । उत । रुद्रम् । हुवेम् ॥

(प्रातः) प्रातः समय अपने दिन का आरम्भ करते हुए हम अपने (भगम्) शौर्य व उत्तम कर्म करने के लिए (अग्निम्) पावक अग्नि, (इन्द्रम्) वर्षा, (मित्रा) प्राणदायक वायु, (वरुणा) जल, (अश्विना) सूर्य और चन्द्रमा एवम् (पूषणम्) हमारे पोषण के लिए प्रदत्त (सोमम्) वनस्पतियों की ऊर्जाओं का (हवामहे) आह्वान करते हैं। और हम (इति) उस (ब्रह्मणः) जगत के (पतिम्) स्वामी का (हुवेम्) गुणगान करते हैं (उत) जो (रुद्रम्) दुःखों और दुष्टों का नाशक है ।

ओं प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेयो विधृता ।

आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥२॥

ऋग् ७:४१:२

प्रातः । जितम् । भगम् । उग्रम् । हुवेम् । वयम् । पुत्रम् । अदितेः । यः । विधृता ।

आध्रः । चित् । यम् । मन्यमानः । तुरः । चित् । राजा । चित् । यम् । भगम् । भक्षि । इति । आह ॥

(प्रातः) प्रातः समय अपने दिन का आरम्भ करते हुए हम (जितम्) सर्व विजयी, (भगम्) कल्याणकारी परन्तु (उग्रम्) दुष्टों को भयभीत करने वाले, (अदितेः) नाशरहित, (विधृता) ब्रह्माण्ड हो धारण करने वाले ईश्वर का (हुवेम्) गुणगान करते हैं । (यः) उसी (राजा) प्रकाशवान ईश्वर की (पुत्रम्) सन्तान (वयम्) हम, उसे (आध्रः) सब ओर से अपने (चित्) मन में (मन्यमानः) धारण किए हुए, उसके (आह) उपदेशों का पालन कर अपने (चित्) मन को (यम्) काबू में रखते हुए, (तुरः) बिना विलम्ब (भगम्) उत्तम कर्म करते हुए (इति) उसकी (भक्षि) उपासना करें ।

ओं भग् प्रणेतर्भग् सत्यराधो भगेमां धियमुदवाददन्नः ।

भग् प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग् प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम ॥ ३ ॥

ऋग् ७:४१:३

भग । प्रणेतृरिति प्रऽनेतः । भग । सत्यराधः । भग । इमाम् । धियम् । उत् । अवा । ददत् । नृः ।

भग । प्र । नः । जनय । गोभिः । अश्वैः । भगः । प्र । नृभिः । नृवन्तः । स्याम् ॥

### Early Moring Prayers (At Dawn)

1. Om praatar-agnim praatar-indraṇ havaamahe  
praatar-mitraa varuṇaa praatar-ashvinaa  
praatar-bhagam pooṣhaṇam brahmaṇas-patim  
praataḥ somam-uta rudraṇ huvema

Rig 7:41:1

(praatar) At dawn, as we begin the day, (bhagam) for our grandeur and glory (havaamahe) we meditate and invite the energies from (agnim) the holy fire, the great purifier, (indraṇ) the rain and thinder, (mitraa) vital air, (varuṇaa) the waters, (ashvinaa) sun and moon and the (somam) herbs, created for our (pooṣhaṇam) nourishment and vitality; and (huvema) we praise the (patim) Supreme Lord (brahmaṇas) of the universe (uta) who is (rudraṇ) the lord of justice and tormentor of evil and ailment.

2. Om praatar-jitam bhagam-ugraṇ huvema  
vayam putram-aditer-yo vi-dhartaa  
aadhrash-chid-yam manyamaanas-turash-chid-  
raajaa chid-yam bhagam bhakṣhe-ety-aaha

Rig 7:41:2

(praatar) At dawn, as we begin the day (vayam) we (huvema) praise God who is (aditer) indestructible, (jitam) victorious, (bhagam) benevolent, (raajaa) luminous, (ugraṇ) tormentor of the evil and (vi-dhartaa) the sustainer of the Universe. We, (yo) his (putram) children (bhakṣhe) worship (ety) him and follow his (aaha) commandments by (yam) controlling our (chid) mind, by (manyamaanas chid) meditating on him from (aadhrash) all directions and by performing (bhagam) noble deeds (turash) without any delay.

3. Om bhaga praṇetar bhaga satya-raadho  
bhag-emaan dhiyam-ud-avaa-dadan-naḥ  
bhaga pra ṇo janaya gobhir-ashvair-bhaga  
pra nṛi-bhir-nṛi-vantaḥ syaama

Rig 7:41:3

(bhaga) O Possessor of all wealth! (praṇetar) O Leader of masses! O (raadho) Embodiment of (satya) Truth! Please (ud avaa) protect (naḥ) us by (dadana) granting us the (emaan) best (dhiyam) intellect, thoughts and emotions. Please (janaya) produce the righteous wealth including (gobhir) cows and (ashvair) horses for (ṇo) us from (pra) all directions. May the (pra) best amongst us (nṛi bhir) lead us so that all of us (syaama) realize our (nṛi vantaḥ) best potentials!

हे (भगं) सर्व ऐश्वर्य युक्त (प्रऽनेतः) गणनायक, (सत्यंऽराधः) पूजनीय सत्यरूप ईश्वर! (नः) हमें (इमाम्) उत्तम (धियम्) बुद्धि (ददत्) देकर हमारी (उत् अव) रक्षा कीजिए । हे (भगं) कल्याणकारी ईश्वर! (नः) हमारे लिए (प्र) सब ओर से (गोभिः) गौ (अश्वैः) अश्वादि धनों को (जनय) उत्पन्न कीजिए । जो (प्र) सबसे (भगं) उत्तम मनुष्य हैं वह हमारे (नृभिः) नायक बनें और हम सब (नृऽवन्तः) उत्तम व्यवहार वाले (स्याम) बनें ।

ओम् उ॒तेदानीं॑ भग॑वन्तः स्यामो॒त प्र॑पि॒त्व उ॒त मध्ये॑ अ॒ह्नाम् ।

उ॒तोदि॑ता म॒घव॑न्त॒सूर्य॑स्य व॒यं दे॒वानां॑ सु॒म॒तौ स्या॑म ॥ ४ ॥

ऋग् ७:४१:४

उ॒त । इ॒दानी॑म् । भग॑वन्तः । स्या॒म । उ॒त । प्र॒पि॒त्वे । उ॒त । म॒ध्ये । अ॒ह्नाम् ।

उ॒त । उ॒त्ऽइ॒ता । म॒घव॑न् । सू॒र्यस्य॑ । व॒यम् । दे॒वाना॑म् । सु॒म॒तौ । स्या॒म ॥

हे (मघवन्) जगदीश्वर! (सूर्यस्य) सूर्य के (उत्ऽइ॒ता) उदय का (इ॒दानी॑म्) यह समय, (अ॒ह्नाम्) दिन के (म॒ध्ये) बीच का समय (उ॒त) और सायंकाल, सभी समय हमारे लिए (प्र॒पि॒त्वे) उत्तम ऐश्वर्य की प्राप्ति के समय (स्या॒म) हों। (व॒यम्) हम (भग॑वन्तः) कल्याणकारी कर्म करने वाले (स्या॒म) हो (उ॒त) और (दे॒वाना॑म्) विद्वानों में भी (सु॒म॒तौ) श्रेष्ठ मती स्थिर हो।

ओं भग॑ ए॒व भग॑वाँ अस्तु दे॒वास्तेन॑ व॒यं भग॑वन्तः स्याम ।

तं त्वा॑ भग॒ सर्व॑ इज्जो॑हवीति॒ स नो॑ भग॒ पुर॑ए॒ता भ॑वे॒ह ॥ ५ ॥

ऋग् ७:४१:५

भगः । ए॒व । भग॑वान् । अ॒स्तु । दे॒वाः । तेन॑ । व॒यम् । भग॑वन्तः । स्या॒म ।

तम् । त्वा॑ । भग॒ । सर्वः॑ । इत् । जो॒हवी॑ति । सः । नः । भग॒ । पुरः॑ए॒ता । भ॒व । इ॒ह ॥

वह (भगः) कल्याणकारी ऐश्वर्य युक्त ईश्वर (ए॒व) ही (भग॑वान्) भगवान (अ॒स्तु) है । (तेन॑) उसी ईश्वर का पूजन करते हुए (व॒यम्) हम (दे॒वाः) विद्वान व (भग॑वन्तः) ऐश्वर्यवान (स्या॒म) बनें । हममें से (तम्) जो (सर्वः) सदैव (त्वा॑) आपके (भग॒) ऐश्वर्य को समझ कर (इत्) उसकी (जो॒हवी॑ति) प्रशंसा करता है (सः) वह और (भग॒) आप ही (इ॒ह) यहाँ (नः) हमारे (पुरः॑ए॒ता) मार्गदर्शक (भ॒व) बनें ।

**4. Om ut-edaaneem bhaga-vantaḥ syaam-ota  
pra-pitva uta madhye ahnaam  
ut-oditaa magha-vant-sooryasya vayan  
devaanaan su-matau syaama**

**Rig 7:41:4**

**O (magha vant) Supreme Lord! (edaaneem) This time of the (oditaa) rising (sooryasya) Sun, the time during the (madhye) middle of the (ahnaam) day and the time near the evening, may all of these time be the time of (pra pitva) obtaining righteous wealth for us. May (vayan) we (syaam) perform (bhaga vantaḥ) noble deeds all the time (uta) and may the (devaanaan) scholars amongst us (syaama) foster (su) best (matau) intellectual ideas.**

**5. Om bhaga eva bhaga-vaamḥ astu devas-tena  
vayam bhaga-vantaḥ syaama  
tam tvaa bhaga sarva ij-johaveeti  
sa no bhaga pura-etaa bhaveha**

**Rig 7:41:5**

**God, (bhaga) The possessor of all of the great wealth (astu) is our (bhaga vaamḥ) well wisher (eva) indeed. May (vayam) we worship (tena) that God and (syaama) become (vantaḥ) possessor of (devas) great knowledge and (bhaga) wealth. Amongst us (tam) whosoever understands and (sarva) always (johaveeti) praises (tvaa) your (bhaga) wealth, may (sa) that person along with the (bhaga) God (bhaveha) become (no) our (pura-etaa) guide to the righteous path.**